JAIN DEEMED-TO-BE UNIVERSITY
CENTER FOR MANAGEMENT STUDIES

आभास

एक नया एहसास

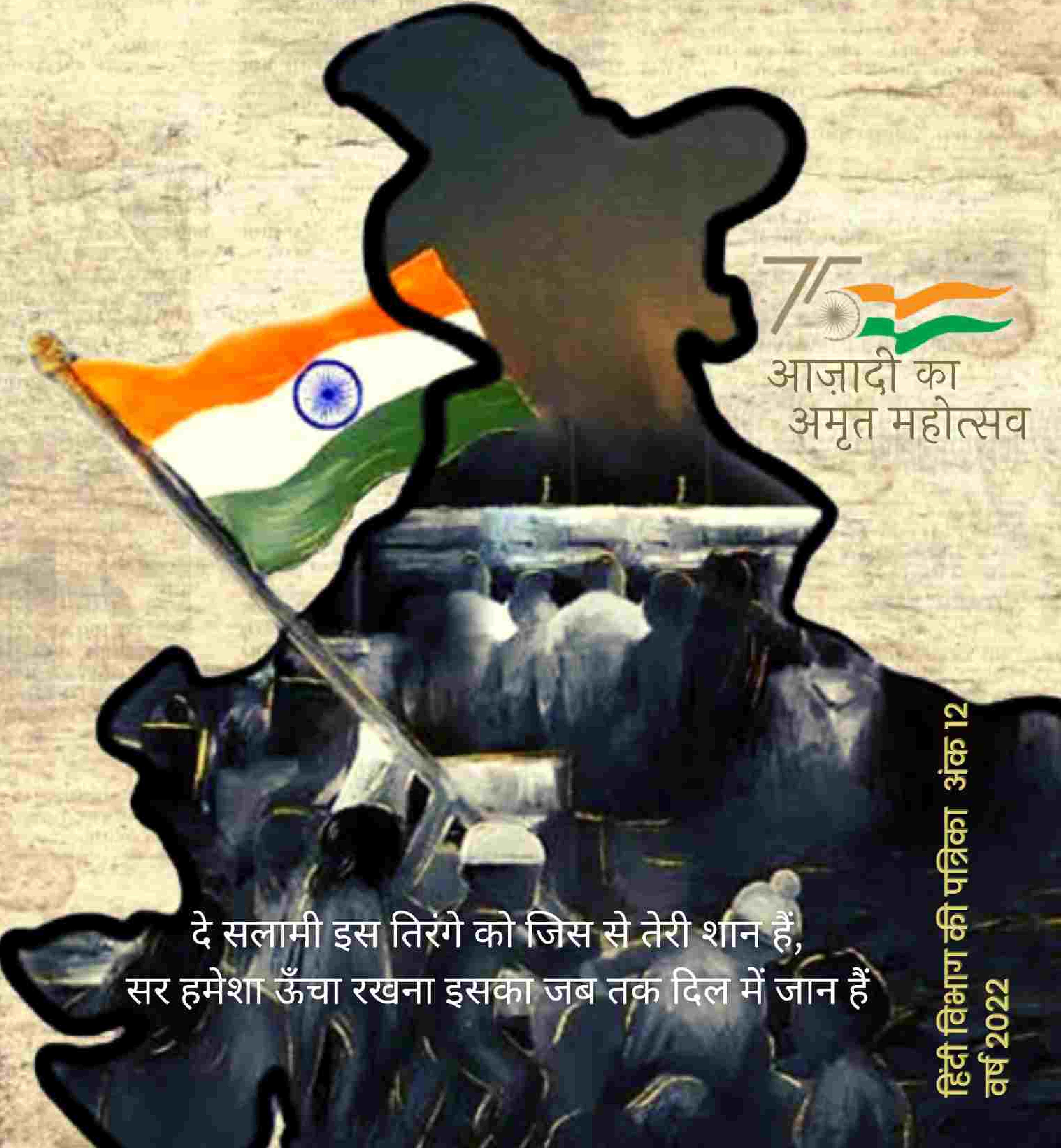

हिंदी विभाग की पत्रिका अंक 12
वर्ष 2022

हिंदी विभाग द्वारा

आभास– २०२२

– एक नया एहसास

अंक - ११

अंक - १२

डॉ चैनराज रॉयचंद
कुलपति
जैन (अभिमत पात्र
विश्वविद्यालय),बेंगलूरु

कुलपति का सन्देश-

सफलता प्राप्त करने का सबसे सरल मन्त्र है अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना और समय को अपनी मुट्ठी में बाँध कर रख लेना। जै.वि.वि. सी.एम.एस. इस अर्थ में अपने विद्यार्थियों को एक संपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। शिक्षा सिर्फकिताबी ज्ञान पर आधारित नहीं होंती, बल्कि उसमें व्यावहारिकता और कलात्मकता दोनों ही समाहित होती है। युवा पीढ़ी के समक्ष अनेक सोपान हैं जो उन्हें सफलता की उँचाइयों तक पहुँचा सकती है। अतः मानसिक और बौद्धिक दृष्टिकोण मेंसतर्कता बरतना ज़रूरी है।

‘आभास’ पत्रिका के नविन दृष्टिकोंण के ग्यारह वें प्रकाशन पर मैं यही सन्देश देना चाहुँगा कि आत्मविश्वास और आत्मबल को टूटने न दें। आप सफलता की उड़ान भरेंगे ।

डॉ. दिनेश नीलकंठ
निदेशक, सी एम एस
जैन(अभिमत पात्र
विश्वविद्यालय),बेंगलूरु.

निदेशक की कलम से-

सी.एम.एस. परिवार के प्यारे सदस्यों,

‘आभास’ पत्रिका के माध्यम से आप सभी से बात करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। ‘आभास’ पत्रिका आपकी क्षमता, आपकी सोच आदि को समझने की एक नयी दृष्टि प्रदान करता है। पत्रिका के लिए लगी मेहनत, लगन और निष्ठा, निःसंदेह सराहनीय है। मैं सारे सदस्यों, संपादक मंडल और तमाम सहयोगियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सदैव कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर रहेंगे।

अनुक्रमणिका

१. सम्पादकीय

२ . कविताएँ

३ . अल्लूरि सीताराम राजू

४ . सेनापति पांडुरंग बापट

५ . कैप्टन लक्ष्मी सहगल

६ . कला

७ . चित्र प्रदर्शन

८ . संकल्प एक नयी पहल

९ . ख़ुशी - इवेंट

१० .हिंदी दिवस

११ . महाविद्यालय परिसर से

सम्पादकीय

बूँद बूँद इकट्ठा होकर सागर बनता है। बूँदों में सागर है और सागर में बूँदे। सागर की हर बूँद उसका हिस्सा है, उसका अंग है क्योंकि बूँदों से ही सागर का अस्तित्व है। इसी सागर में जीवन के दर्शन होते हैं । हर महान कार्य के पीछे एक छोटा प्रयास अवश्य होता है। यही प्रयास सागर के उन छोटे-छोटे बूंदों के समान है जो सागर की महानता का द्योतक बनते हैं।साहित्य भी सागर के समान है। एक सहृदय व्यक्ति की संवेदनाओं के लिखित रूप को साहित्य कहा जा सकता है। व्यक्ति की यह संवेदना कविता, कहानी, जीवनी, गीत, गजल आदि रूपों में अभिव्यक्त होती हैं । यह उसकी सहृदयता और भावुकता का संकेत मात्र नहीं बल्कि उसकी अभिव्यक्ति का साधन भी है। उसके रोते- हँसते ह्रदय की अकेली मुस्कान भी।

आधुनिक तकनीकी युग में मनुष्य नई नई तकनीकों के पीछे भागने लगा है यह उसकी अनिवार्यता भी है किंतु इस दौड़ में अपने लोग और अपने समाज के लिए उसके ह्रदय में कंपन अवश्य होता है। इस कंपन को शब्द रूप देने का प्रयास ही यह ‘आभास’ पत्रिका है। छात्रों की साहित्यिक रुचि को जीवित रखना और उसके लिए मंच प्रदान करना इस पत्रिका का मूल मंत्र है।

हिंदी विभाग की ओर से प्रकाशित होने वाली ‘आभास’ पत्रिका हमारी साहित्यिक गतिविधियों तथा सामाजिक अभिरुचि का संकेत भी है।

प्रस्तुत ‘आभास’ पत्रिका के 12 वें अंक में छात्रों की साहित्यिक अभिव्यक्ति और सामाजिक अभिरुचि को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उनका यह छोटा प्रयास भविष्य में सुंदर एवं सजग रूप धारण करें - यही शुभकामना मैं देना चाहूंगी। भाषा एवं साहित्य संबंधी आभास को नया आकार, नया रूप और नई अभिव्यक्ति प्रदान कर आभास को ‘एक नया एहसास’ बनाने वाले प्रत्येक सहयोगी को अनंत धन्यवाद। आशा है यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रिय अवश्य लगेगा।

सुधा कनकानवर
सहायक प्राध्यापिका
हिंदी विभाग
सी एम एस
जैन (अभिमत पात्र विश्वविद्यालय)

सह संपादकीय-पत्र

सेंटर फॉर मैनजमेंट स्टडीज़, जैन(अभिमत पात्र विश्वविद्यालय) के प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी निश्छल एवं निष्पक्ष शाब्दिक अभिव्यक्ति में किसी भी प्रकार से पीछे नहीं है। चाहे प्राकृतिक आपदा हो, भ्रष्टाचार हो या संवेदनाओ का सूखता सागर, वैज्ञानिक प्रगति की दिशा में बढ़ते कदम है, सबके प्रति सजग एवं संवेदनशील हैं। आशा है हमारे प्रबुद्ध पाठक इन नवोदित रचनाकारों की खामियों को अनदेखा कर उनके उत्साह को अवश्य सराहेंगे। यह अंक अपने पाठकों का भरपूर मनोरंजन कर सकेगा . . . आपके सुझाव ही हमारा संबल है ।

सह संपादकीय
जिनेश कुमार

सह संपादकीय
मान्सी मुणोत

संपादकीय सहयोग

अभिषेक एम **केशव मर्दा** **आलोक कुमार**

अल्लूरि सीताराम राजू

अल्लूरि सीताराम राजू : भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक क्रांतिकारी थे। वे भारत की आज़ादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने वाले वीर क्रांतिकारियों में से एक थे।

अल्लूरी सीताराम राजू का जन्म 4 जुलाई, 1897 ई. को पांडुरंगी गाँव, विशाखापट्टनम, आन्ध्र प्रदेश में हुआ था। उनकी माता का नाम सूर्यनारायणाम्मा और पिता का नाम वेक्टराम राजू था। पिता के गुज़र जाने के बाद अल्लूरी सीतारामा राजू के चाचा श्री रामकृष्णन राजू ने उनके देखभाल की जिम्मेदारी ली थी । उनपर महात्मा गांधी के विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा था। परिणामस्वरूप आपने आदिवासीयों को अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध संगठित करना शुरू किया, जिसका आरंभ आदिवासीयों का उपचार व भविष्य की जानकारी देने से हुआ था। यही नहीं इस महान क्रांतिकारी ने महर्षि की तरह दो वर्ष तक सीतामाई नामक पहाडी की गुफा में अध्यात्म साधना व योग से अपनी चिंतन-शक्ति को विकसित किया था । यही वह समय था, जब राजू ने आदिवासीयों और गिरिजनों की प़ीडा को करीब से जाना। उन्होंने आदिवासियों को मद्यपान छोड़ने तथा अपने विवाद पंचायतों में ही हल करने की सलाह दी। उन्हें उठ ख़डा होने के लिए प्रेरित किया था।

सीताराम राजू ने ओजेरी गाँव के पास अपने 80 अनुयायियों के साथ मिलकर दो अंग्रेज़ अधिकारियों को मार डाला। उनकी बढ़ती गतिविधियों से अंग्रेज़ सरकार सतर्क हो गयी। ब्रिटिश सरकार पर सीताराम राजू के हमले लगातार जारी थे। उन्होंने छोड़ावरन, रामावरन् आदि ठिकानों पर हमले किए। उनकी ताकत व संकल्प से अंग्रेज़ सरकार भलीभाँति परिचित थी। जनवरी से लेकर अप्रैल तक यह सेना बीहड़ और जंगलों में सीताराम राजू को खोजती रही। मई 1924 में अंग्रेज़ सरकार उन तक पहुँच गई। फलतः आपको अपने प्राणों की आहुती देनी पडी । इस प्रकार एक महान क्रांतिकारी ने देश के लिए अपना बलिदान दे दिया ।

- बी.बी.ए - 1H

सेनापति पांडुरंग बापट

स्वतंत्रता सेनानी पांडुरंग महादेव बापट (12 November 1880 – 28 November 1967), भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान स्वतंत्रता सेनानी थे! लोग उन्हें सेनापति बापट के नाम से जानते हैं। स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी पांडुरंग महादेव बापट के बारे में साने गुरूजी ने कहा था :- 'सेनापति बापट में मुझे छत्रपति "शिवाजी महाराज तथा समर्थ गुरु रामदास तथा संत गुरु तुकाराम की त्रिमूर्ति दिखायी पड़ती है। साने गुरू जी पांडुरंग महादेव बापट जी को लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी तथा विनायक दामोदर सावरकर का अपूर्व, मधुर और मजबूत मिश्रण भी करते थे! सेनापति बापट को भक्ति, ज्ञान व सेवा की सुलभ गायत्री की संज्ञा देते थे।

शुरुआत में टाटा कंपनी बिना किसी कानूनी औपचारिकता के किसानों की ज़मीन में घुस आई और वहाँ खुदाई शुरू कर दी। पर मूलशी, पूना (अब पुणे) के बहुत नज़दीक था और उस समय भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र भी था। इसलिए जब एक किसान ने अपनी ज़मीन पर खुदाई का विरोध किया और एक अँग्रेज़ अफ़सर ने उसे बंदूक दिखाई तब पूना में इसका मजबूत विरोध हुआ।"उन्होंने आगे लिखा है, " बांध का विरोध सुनिश्चित करने का नेतृत्व युवा कांग्रेसी नेता सेनापति बापट ने किया। बापट अपने अन्य साथियों के साथ बांध निर्माण को एक साल तक रोकने में सफल रहे। परंतु उन्हें 3 साल की लंबी लडाई के बाद असफलता की प्राप्ति हुई." लेकिन शुद्ध सत्याग्रह न तो पूर्ण अहिंसा पर ज़ोर देता है न ही पूर्ण हिंसा पर। यह हिंसा की अनुमति तब देता है जब वांछित लक्ष्य अहिंसा के मूल्य की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण दिखे।मूलशी सत्याग्रह के लिए गिरफ्तार होने के बाद उन्हें 7 वर्ष जेल में काटने पड़े। 1931 में आखिरकार उन्हें रिहाई मिली। इसके बाद मुंबई में सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आयोजित एक आम सभा में शामिल होने के कारण बापट को तीसरी बार जेल जाना पड़ा। जहां यह सभा हुई थी, उस सड़क का नाम आगे चल कर 'सेनापति बापट रोड' रखा गया।

15 अगस्त 1947 को, पुणे में पहली बार तिरंगा फहराने का सौभाग्य बापट को मिला। 87 वर्ष की आयु में, 28 नवम्बर 1967 को बापट ने दुनिया से विदा ले ली। पर उनकी यादों को 1964 में प्रकाशित अमर चित्रा कथा ने जीवंत कर दिया। 1977 में भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया। बापट अपने आप में एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के मालिक थे जिन पर किसी पार्टी या व्यक्ति विशेष का प्रभाव नहीं था।

- बी.बी.ए - 1G

कैप्टन लक्ष्मी सहगल

लड़ाई जारी रहेग' – नारे को बुलंद करनेवाली कैप्टन लक्ष्मी सहगल का असली नाम लक्ष्मी स्वामीनाथन था। आपका जन्म 24 अक्तूबर 1914, चेन्नई में हुआ था । आप वृत्ति से डॉक्टर थी । कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारत की अब तक की, सबसे सफल महिलाओं में से एक है। लक्ष्मी सहगल ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित 'आजाद हिंद फौज (आईएनए)' के लिए अपने हाथों में बंदूक थामी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक शेरनी की भाँति लड़ीं। जब सुभाष चंद्र बोस द्वारा INA में एक महिला रेजिमेंट का गठन किया गया, तो वह सभी महिला ब्रिगेड की प्रमुख बन गईं और कैप्टन लक्ष्मी की उपाधि अर्जित की।

1942 में, अंग्रेजों द्वारा जापानियों को सिंगापुर के आत्मसमर्पण के दौरान, लक्ष्मी ने युद्ध के घायल कैदियों की सहायता की , जिनमें से कई भारतीय स्वतंत्रता सेना बनाने में रुचि रखते थे। इस समय सिंगापुर में केपी केशव मेनन , एससी गुहा और एन. राघवन सहित कई राष्ट्रवादी भारतीय काम कर रहे थे , जिन्होंने एक काउंसिल ऑफ एक्शन का गठन किया। उनकी भारतीय राष्ट्रीय सेना , या आज़ाद हिंद फौज को, हालांकि, युद्ध में उनकी भागीदारी के संबंध में कब्जा करने वाली जापानी सेना से कोई दृढ़ प्रतिबद्धता या अनुमोदन प्राप्त नहीं हुआ।

यह इस पृष्ठभूमि के खिलाफ था कि सुभाष चंद्र बोस 2 जुलाई 1943 को सिंगापुर पहुंचे। लक्ष्मी ने सुना था कि बोस महिलाओं को संगठन में शामिल करने के इच्छुक थे और उनसे एक बैठक का अनुरोध किया, जिसमें से वह एक महिला रेजिमेंट स्थापित करने के लिए जनादेश के साथ उभरीं, झांसी रेजीमेंट की रानी कहलाने के लिए महिलाओं ने सभी महिला ब्रिगेड में शामिल होने के लिए उत्साह से प्रतिक्रिया दी और डॉ लक्ष्मी स्वामीनाथन कैप्टन लक्ष्मी बन गईं, एक ऐसा नाम और पहचान जो उनके साथ जीवन भर रहेगी।

1971 में, लक्ष्मी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) में शामिल हो गईं और राज्यसभा में पार्टी का प्रतिनिधित्व किया । बांग्लादेश संकट के दौरान , उन्होंने बांग्लादेश से भारत आने वाले शरणार्थियों के लिए कलकत्ता में राहत शिविर और चिकित्सा सहायता का आयोजन किया। वह 1981 में अखिल भारतीय लोकतांत्रिक महिला संघ की संस्थापक सदस्यों में से एक थीं और उन्होंने इसकी कई गतिविधियों और अभियानों का नेतृत्व किया। [8] दिसंबर 1984 में गैस त्रासदी के बाद उन्होंने भोपाल में एक मेडिकल टीम का नेतृत्व किया, 1984 के सिख विरोधी दंगों के बाद कानपुर में शांति बहाल करने की दिशा में काम किया और 1996 में बैंगलोर में मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के खिलाफ एक अभियान में भाग लेने के लिए उन्हें गिरफ्तार किया गया। वह अपनी 92 वर्ष की आयु में, 2006 में कानपुर में अपने क्लिनिक में नियमित रूप से रोगियों की चिकित्सा कर रही थी।

2002 में, चार वामपंथी दलों - भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी , भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) , क्रांतिकारी सोशलिस्ट पार्टी और ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक ने सहगल को राष्ट्रपति चुनाव में उम्मीदवार के रूप में नामित किया। वह एपीजे अब्दुल कलाम की एकमात्र प्रतिद्वंद्वी थीं , जो विजयी हुईं।

19 जुलाई 2012 को, सहगल को कार्डियक अरेस्ट हुआ और 23 जुलाई 2012 को उनकी मृत्यु हो गई। उनका शरीर चिकित्सा अनुसंधान के लिए गणेश शंकर विद्यार्थी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया गया था।

- बी.बी.ए - 1F

जन्मे हिन्दुस्तान में

मिट्टी में मिल गई न जाने कितनी
संस्कृति मानव जाति की यार
दोस्त न जाने कितनी विशेष गुणकारी संस्कृति
हमारे भारत की कायम सदियों से नहीं मिटती शान हमारी
दुनिया का गणित जब अटका ,
नो संख्या पर गणित को शून्य दे आगे
बढ़ाया एक भारतीय जिंदाबाद दोस्त
शतरंज का खेल हो या बेडमिंटन का
इजाद किया हम भारत के पुत्रो ने सच
मोहन जोदड़ो की खंडहर कहती यार
हमारे सुनहरे इतिहास की अमर कहानी
झांसी की रानी कहती मैं भारत की योद्धा नारी
राणा प्रताप ने अपनी तलवार से दो टुकड़े
कर डाले घोड़े समेट दुश्मन के
उधम सिंह ने जलियांवाला बाग के
पापी जनरल डायर को मारा लंदन जा
चांद पर पानी किसने खोजा हमने खोजा
मंगल पर कम बजट में मान किसने भेजा
हम भारतीयो ने जिंदाबाद यार
कल्पना चावला हमारे भारत की शान
संस्कृति हमारी ऐसी खुदकुशी बहुत कम
रिश्ता रिश्तेदार कम करते हरदम तनाव
तनाव दूर करने आता होली का त्योहार
तीज त्यौहार से बना रहता उत्साह यार
धर्म दर्शन दूर करें मानव के कष्ट सदा
साकारात्मक विचार का नाम धर्म भाई
मां बहन घर में रहकर अवसाद रोकती
भारत मैं जन्म लिया है हमको अभिमान
ओरबिट में सेटेलाइट छोड़े इतने बना
विश्व रिकॉर्ड वैज्ञानिक ऐसे जन्मे यहां
किस्मत हमारी हम जन्मे हिन्दुस्तान में

-चिराग जैन

शृंगार

मैं श्रृंगार करूँ
वह शिकार किया करें

आँखों में काजल लगाऊँ
वह मुँह काला किया करें

होठों पर लाली सजाऊँ
वह लार टपकाया करें

अपनी मर्ज़ी का लिबास पहनू
वह आँखों से उतारा करे

मैं इन्हें कैसे मर्द कहूँ ?
जो हर रोज़ सड़क पर मर्दानगी को नीलाम किया करे.....

-तनिष्क

वो टूटा तो था पर हारा नहीं था...

वह टूटा तो था पर हारा नहीं था...
वह टूटा तो था पर हरा नहीं था
माना कि उसके चेहरे पर कोई खिलखिलाती हंसी नहीं थी
पर यह कैसे मान ले कि उसमें किसी बात की ख़ुशी नहीं थी
ज़िम्मेदारियों को तो फिर सम्भाला था उसने
न जाने कितने दोस्तों को अंधेरों से निकाला था उसने
पर ख़ुद अपनी मदत के लिये किसी को पुकारा नहीं था
वह टूटा तो था पर हरा नहीं था

सब खामोशी से सुनते जब प्यार की कहानियों में समा जाता वह
टूटे दिल के तार जुड़ते जब गिटार पर कोई धुन बजाता वह
महफ़िल की जान थी रहनुमा था यारों का
कैलेंडर पर रखता था हिसाब जन्मदिन और त्योहारों का
इतना खुश मिज़ाज कि मायूसी कतराती थी
उसकी डायरी के पन्नों से मोहब्बत की ख़ुशबू आती थी

जब लगता गले तो लगा कि पाहाड़ों में समा गया
जैसे अर्जुन ने रथ की भाग दोड़ कृष्ण को सम्भाला था

पर एक लड़ाई तो उसकी भी थी जिसकी तरफ़ किया उसने कोई इशारा नहीं था
हाँ वह टूटा तो था पर हरा नहीं था
तो फिर जाने उसमें आया इतना हौसला कैसे
कि अबके उसने कर लिया यह फैसला कैसे
कि अबके बिछड़ें तो शायद ख़्वाबोंमें मिले
कुछ ऐसे ही लिखे लफ़्ज़ उसकी डायरी में मिले

जिसके नाम का मतलब ही फूलों का रस था
वह मकरंद ज़िंदगी से क्यों इतना नीरस था

आख़िर क्यों उसने कहानियों के ज़रिये अपना दर्द लिखा नहीं
क्यों उसे लगा कि अब लिखने समझने और कहने को कुछ बचा नहीं
क्यों उसकी तरह हम मान लेते हैं कि चुनौतियों से आगे दौड़ना नहीं है
क्यों हम सब सोच लेते हैं कि सफ़र ख़त्म हुआ नहीं अब लौटना सही है

मैं नहीं कहता सबको जाकर अपना हाल सुनाये आप
लेकिन वक़्त करवट बदलता है
इससे ज़रूर आज़माएँ आप

मुश्किल है लेकिन मान अगर यह मशवरा लेंगे
मुमकिन है सालों बाद अपनी तकलीफ़ों पर मुस्कुरा देंगे
इन बातों को समझना मेरे लिए भी मुश्किल, पर ज़रूरी था
यक़ीन मानिए सालों पहले मैं भी उस मुश्किल हालत और उस आख़री फ़ैसले से कुछ ही दूर था
यह भी मुमकिन था कि मेरी लिखी बातें आप सुन नहीं पाते
शायद मेरी कहानियों के मुरीद मेरे अज़ीज़ दोस्त बन नहीं पाते
इतना सब कहने के पीछे मक़सद यही सारा था
कि काल जब आने वाली पीढ़ी आपके किससे सुनाये तो कोई शायर नहीं
आप ख़ुद बतायें
कि
मैं टूटा जरूर था पर हारा नहीं था....

फ़ौजी

मेरी रगों में दौड़ते लहू पर क़र्ज़ है तुम्हारा
दूर परबत की चोटी पर तैनात भाई है हमारा
जिसको सिखा रहे हो जंग का मतलब उससे बेहतर
कौन जनता है जंग का मतलब
ऊँचाइयों से उत्कर्ष
ठोकर है आरम्भ जिसका
सूरज से प्रचंड प्रज्वलित है वह
फ़ौजी है वह
बलिदान परम धर्म, धरती का बेटा
दुश्मन का शूल है वह
फ़ौजी है वह
रॉबिन, बत्रा, मानिक शाह, सिंह, यादव
पीठ पर नहीं, इसने छाती पर लिए प्रहार
हर माँ के बेटे या बेटी की सुरक्षा मेरा फ़र्ज़ है कहता है
वह
तुम्हारे घर का स्तम्भ है वह
फ़ौजी है वह

विक्रम

सर ऊँचा, दिल में चाह रखना
कुछ ऐसे ही विक्रम को याद रखना
वक्त को शैह और मात दी जिसने
कुछ ऐसे शौर्य को याद रखना
किसी और को देदी सासें अपनी
कुछ ऐसे ज़िंदगी को याद रखना
सीने में दिल, दिल में जान रखना
कुछ ऐसे ही विक्रम को याद रखना

-गुमनाम

जंगल जंगल पता चला है

क्यू हाफ़ रही है कुदरत उसका दम निकला है
सर पर जो था ताज बर्फ़ का वो पिघला है
हमें फ़र्क़ बस इतना कि मौसम बदला है
जंगल जंगल आग लगी थी पता चला है

मुझे याद है
मुझे याद है वह दिन जब नहीं आसमाँ पर बादल चाएँ थे
हम सभी बादलों से ख़ाली यह उम्मीद लगाये थे
कि
रूट बदले तो मौसम को थोड़ा रवानी मिल जाए।
और इसी बहाने शहरों को थोड़ा पानी मिल जाए।
पर बरसा ऐसा सावन के सावन से हम सब ऊब गए ।
कितने शहर थे सूख गए ।
कितने शहर थे डूब गए ।

करवट ली कुदरत ने ऐसी कि हर ज़र्-रा ज़र्-रा थर्राया है ।
पर हैरानी की बात नहीं सब अपना किया कराया है ।

और तुमने ही तो कहा था ।
बदले या ना बदले वक्त
हमको क्या
कुदरत का मिज़ाज ही जाए कितना भी बदल
हमको क्या ।
हमारा सफ़र हो आसानी से और सिमेंट के बंगल बन जाएँ
कट जाए जंगल, मिट जाए दरख्त
हमको क्या

पर भूल गए कि तुम भी इसी कायनात का हिस्सा हो
जो कहानी लिखी जा रही है तुम उसका अगला हिस्सा हो

काग़ज़ पर आधी टेढ़ी लकीरें बनाकर पूछती है
वह चार साल की लड़की एक तस्वीर बनाकर पूछती है
के अगर मान लो

काग़ज़ पर आधि टेढ़ी लकीरें बनाकर पूछती है
वो चार साल की लड़की एक तस्वीर बनाकर
पूछती है
के अगर मान लो
मान लोगे ना
तो कहती ही
के तुमसे एक मशवरा होगा
मैं जब बड़ी हो जाऊँ ना तो मेरे लिए एक घर
बनना जिसने नदी तालाब जंगल पहाड़ सब होगा

मैं उसकी तुतलातीं ज़बान की कहानी रोक लेता हूँ

के ऐसा नहीं के तेरा जहां ख़ुशियोंसे भरा नहीं
होगा
पर शायद जब तक तुम बड़ी होगी तब तक कुछ
हरा नहीं होगा

माना कि तरक़्क़ी के लिए सारे दायरे तोड़कर
जाएँगे
पर कभी सोचा है की आने वाली नस्ल के लिए
हम क्या छोड़ जाएँगे

नाप टोल कर मिलेगा पानी
ऐसा हाल करेंगे, क्या करोगे जब वो नो-जवान
उठकर तुमसे सवाल करेंगे

के तुम तो सच जानते थे ना
सारी दुनिया घूम कर बैठे थे
जब कुदरत बे लिबास हो रही थी
क्यू आँखें मूँद कर बैठे थे

बाद हास दिन का जवाब सोच लेना
तब चाहे जितनी मर्ज़ी बहाने दो
अरे यह सब तो चलता रहेगा साहब
छोड़ो इससे जाने दो
तब तक मान आराम से जो सरकार ने किया
फ़ैसला है
अरे जंगल कट जाएँगे ना जाने क्यू वो जुलूस
निकला है
उसकी तकलीफ़
उसका दर्द
उसका मसला है
और उस अख़बार को जला देना वर्ना मैं कही
तुमसे पूछ ना लू
जंगल जंगल आग लगी थी पता चला है ?

-तनिष्क

हम आज के कल हैं

पहाड़ों की बर्फ से ढकी चोटियों से निकली
सबसे शुद्ध जलधाराएँ,
समृद्धता और विशालता के साथ मिट्टी को पोषण देने वाली,
हमारी संस्कृति और विरासत
ने विश्व एटलस पर अपनी छाप छोड़ी है।
आसमान छूती महत्वाकांक्षाओं के साथ
फल-फूल रहा है हमारा देश,
जिसने आकांक्षाओं के सभी क्षेत्रों में
महानतम हस्तियों को जन्म दिया है,
दक्षिण के तटों से लेकर उत्तर-पूर्व की घाटियों तक,
हमारी प्राकृतिक सुंदरता खुद को
मोहक रूप में सामने लाती है।
पश्चिम के डेल्टा, सबसे अच्छा पारिस्थितिकी तंत्र,
पठार की ओर बढ़ते हुए,
प्रौद्योगिकी ने अपनी विजय पाई है।
हम इतिहास की भूमि हैं, हम आज का कल हैं,
हम एक ऐसे देश के नागरिक हैं
जहाँ आशा और इच्छा बेहतर कल के लिए
आदर्श वाक्य हैं।

-आकांक्षा एम धोखा

यारों की यारी

तू ना होता तो मेरा क्या होता,
तू ना होता तो मैं कैसे सोता।
तेरी वजह से रहता हूँ कुश मैं,
तेरी यारी बहुत प्यारी है।
हुई होगी कभी गल्ती मुझसे तो,
भूल कर माफ करना यार ।
एक तू ही है जो हमेशा रहेगा,
करू मैं गल्ती तो तू भी सहेगा।
मेरी इतनी मदद की तूने,
बहुत मोहब्बत है तुझसे।
तेरी वे गंदी गंदी गालियाँ,
मेरे गुस्से पे बजती तालियाँ,
नहीं भूलुंगा भाई,
जब तक है जान तब तक है हमारी यारी ।

-चेल्सी अगरवल

वह भी रोते हैं

हाँ, वह भी रोते हैं..!

हाँ, वह भी रोते हैं,
पर बदनाम फिर भी वही होते हैं,
क्यों पहचाना नहीं किसकी बात कर रहा हूँ ?
जी बात तो यहाँ लड़कों की ही हो रही है,
दर्द तो उनको भी होता है,
रोते तो वह भी है ।
बस हम उनके उस मर्दानगी वाले मुखौटे पर,
दर्द और छिपे आँसुओं की वह लकीरे
ढूँढ ही नहीं पाते हैं,
कभी किसी के विरह में,
तो कभी बेटी के विवाह में,
यह छिपे जज्बात आँसू बनकर बह ही जाते हैं
कभी माँ के दुख में,
तो कभी प्रेमिका के प्रेम में,
जज्बातों का भी क्या अलग खेल है,
इस समाज में लड़की रो पड़ी तो भावुक हुआ समाज..!
यह डर से दवे जज्बात ही तो एक दिन
ज्वालामुखी बन जाएंगे और उस दिन
यह तुम्हें अपनी क्रोध की अग्नि में जलाएंगे..!
लड़का रो पड़ा तो कमजोर,
इनके प्रेम का भी तो क्या कहना
कभी गुस्से के बाद वाली हालत देखी है इनकी
और अपने गुस्से को कोसते रोते हैं
या बस शांत बैठे मन ही मन किसी पीड़ा को सहते हैं..!
रो पड़ोगे तुम भी जैसे यह खुद,
कभी माता और पत्नी के बीच पिसते हैं
और कभी बेटी और समाज के बीच कसते हैं
हाँ, यह वही पुरुष है
जो मरदानगी के मुखौटे के पीछे
हर रोज, हर दफा, आँसुओं को पीते हैं..!
कभी सोची है व्यथा इनकी ?
रोना हो तो मन खोल के रो भी नहीं पाते हैं
जिम्मेदारियों का बोझ भी तो यही उठाते हैं
सपनों को पीछे छोड़ यह सब के रंग में रंग जाते हैं
क्यों जिम्मेदारी सिर्फ उनके कंधों आती है..!
पूछना तो यह भी चाहते हैं
पर कभी पूछ ही नहीं पाते हैं
हाँ, यह भी रोते हैं कभी माँ की गोद में,
तो कभी प्रेमिका के गले लग के
और अक्सर मन ही मन अकेले में ही
यह उन आँसुओं का घूँट पीते हैं..!
हाँ, यह भी रोते हैं और अंत में बदनाम भी यही होते हैं..!

-ध्रुव जैन

बहना

रूठ जाए तो मना लेना
पराया धन उसे न कहना।

जीवन भर साथ देती है
मुश्किलें आसन करती है।

गुप्त बाते तुम्हारी रख लेगी
माँ से शिकायत तेरी करेगी
लेकिन कभी न खुलेगा तेरा राज
वो बहन है तेरी कर उसके सारे काज।

रक्षाबंधन है उसका साथ
हमसफर से पहले है आप
संजोए रखना उसकी याद
बचपन जीना चाहो जब
करना तुम उसे याद।

सरहद की रक्षा करनी है
रक्षा करना है धर्म
नही आ पाया इस रक्षाबंधन
दाईत्व से बंधा हू यहाँ पर।
रखना है देश की बह्नों का लाज

-अभिषेक

कला

-केशव मर्दा

-ए बनर्जी

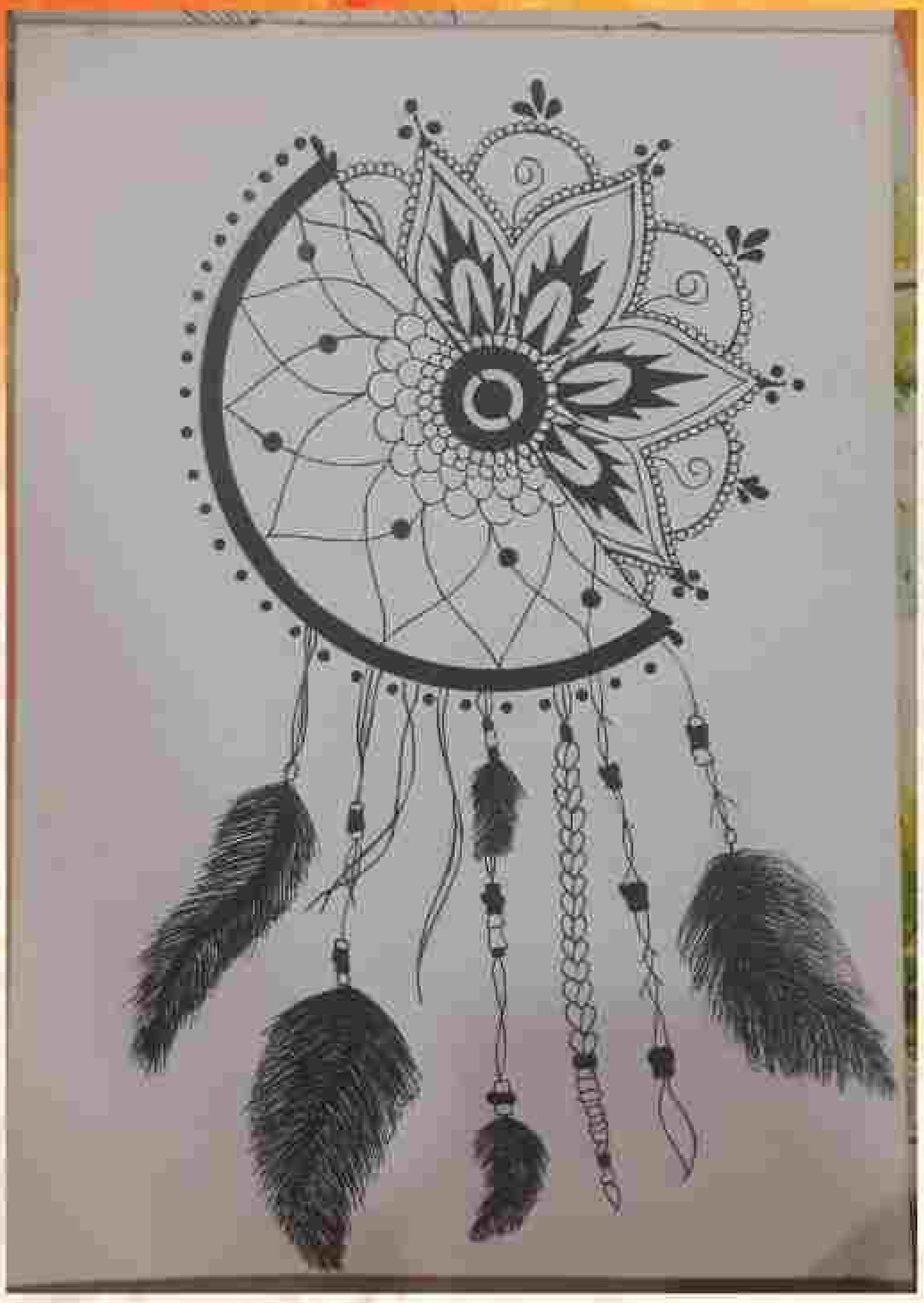

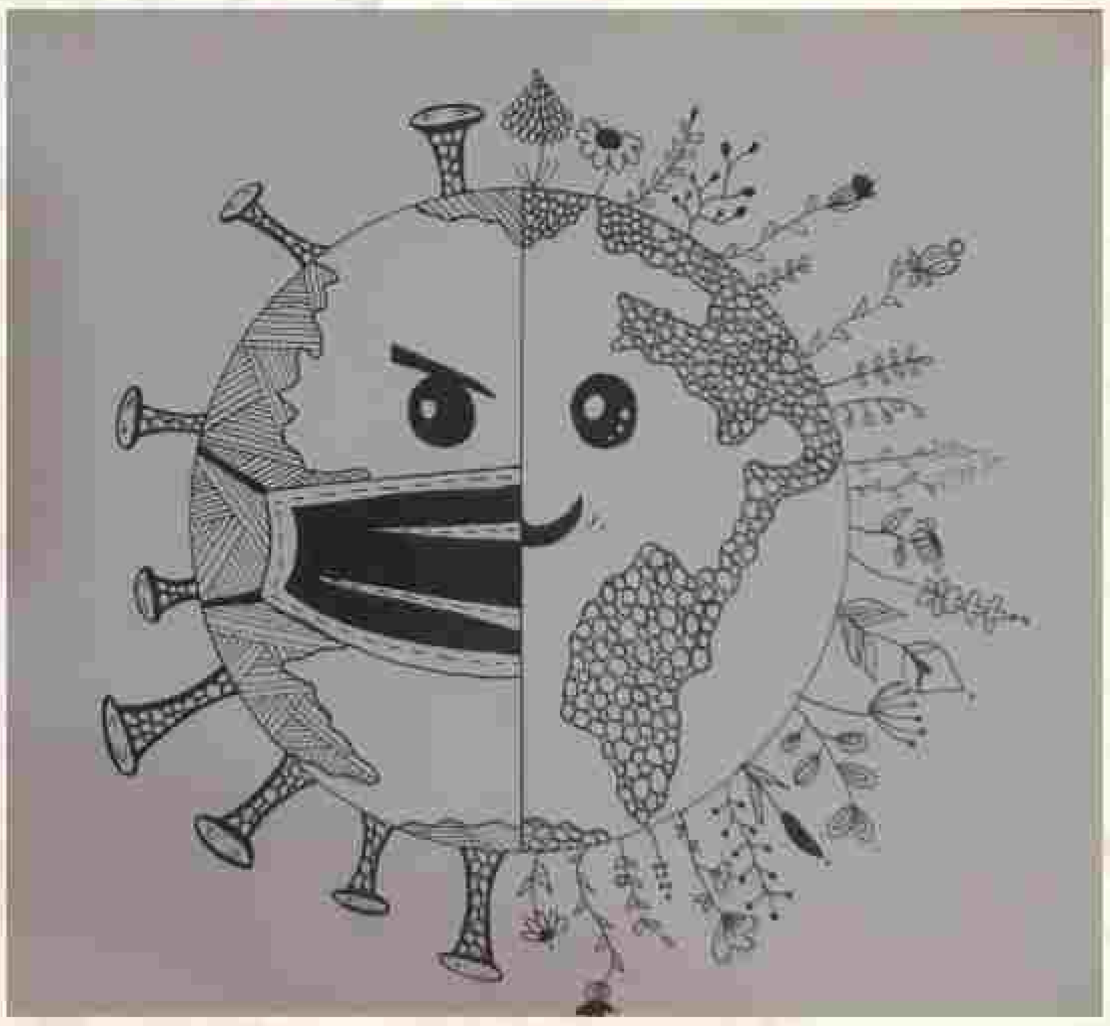

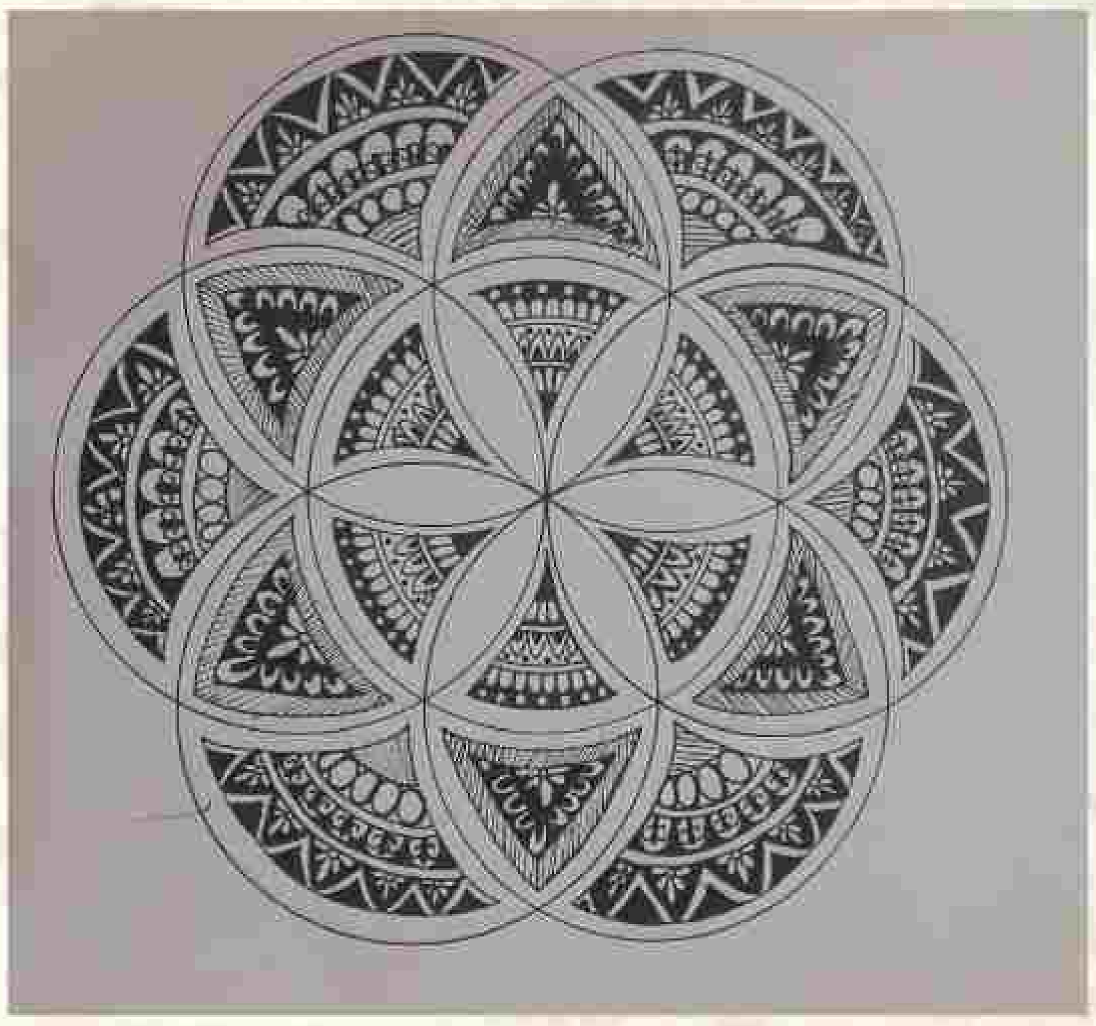

-अनिशा जैन

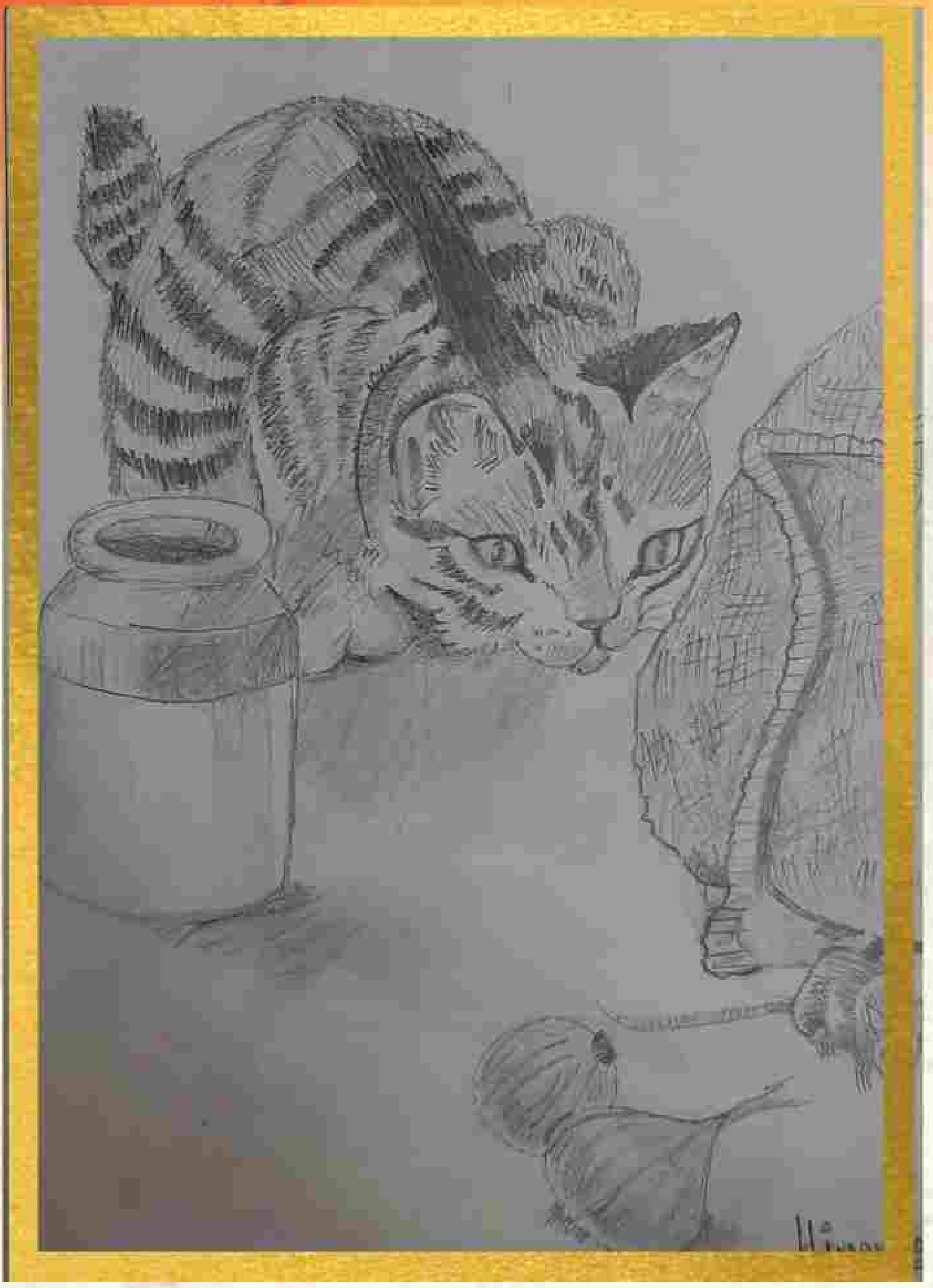

-हिमांशी भंसाली

-दीपिका एस

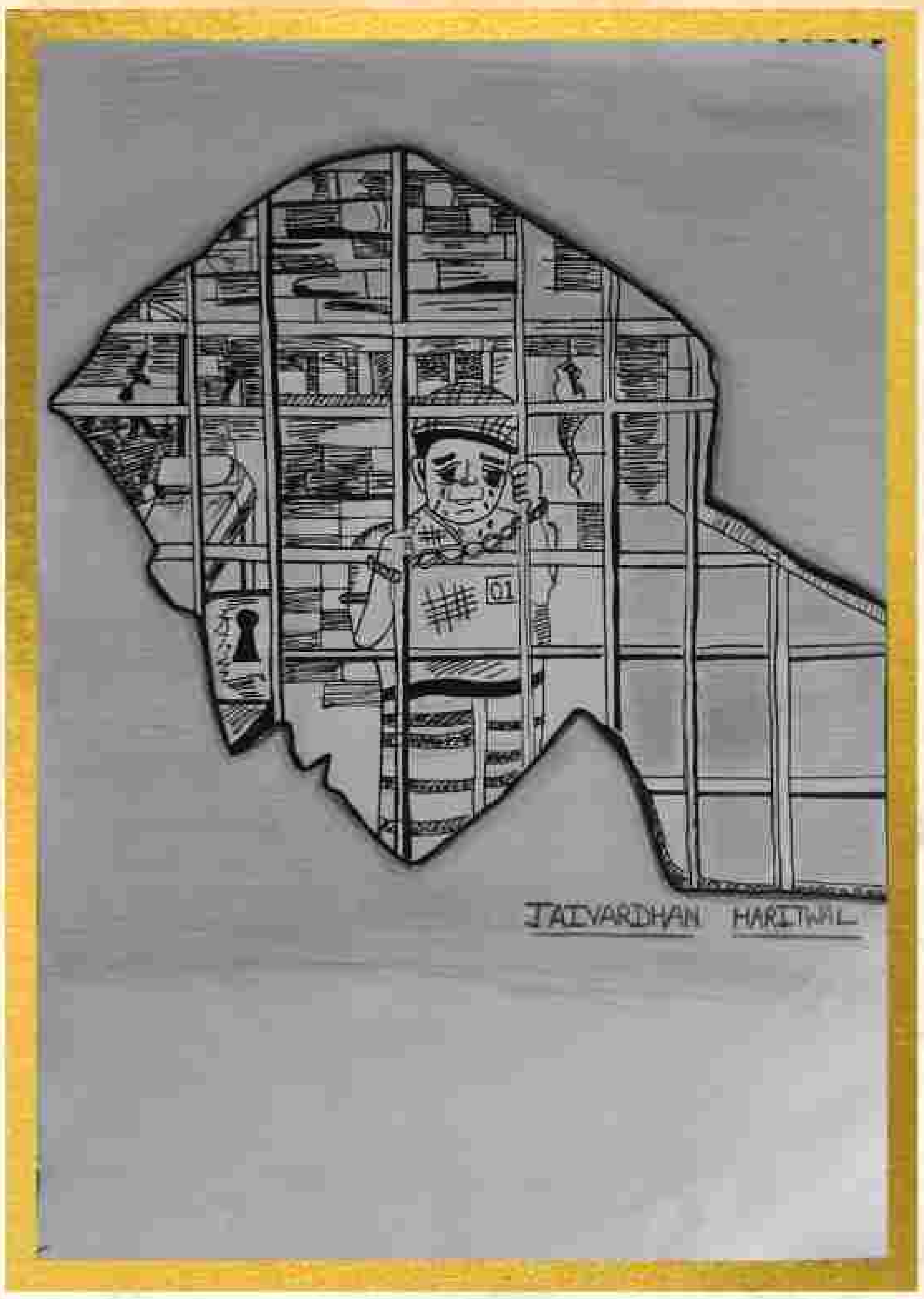

-जयवर्धन हरितवाल

-तेजस श्रिया

चित्र प्रदर्शन

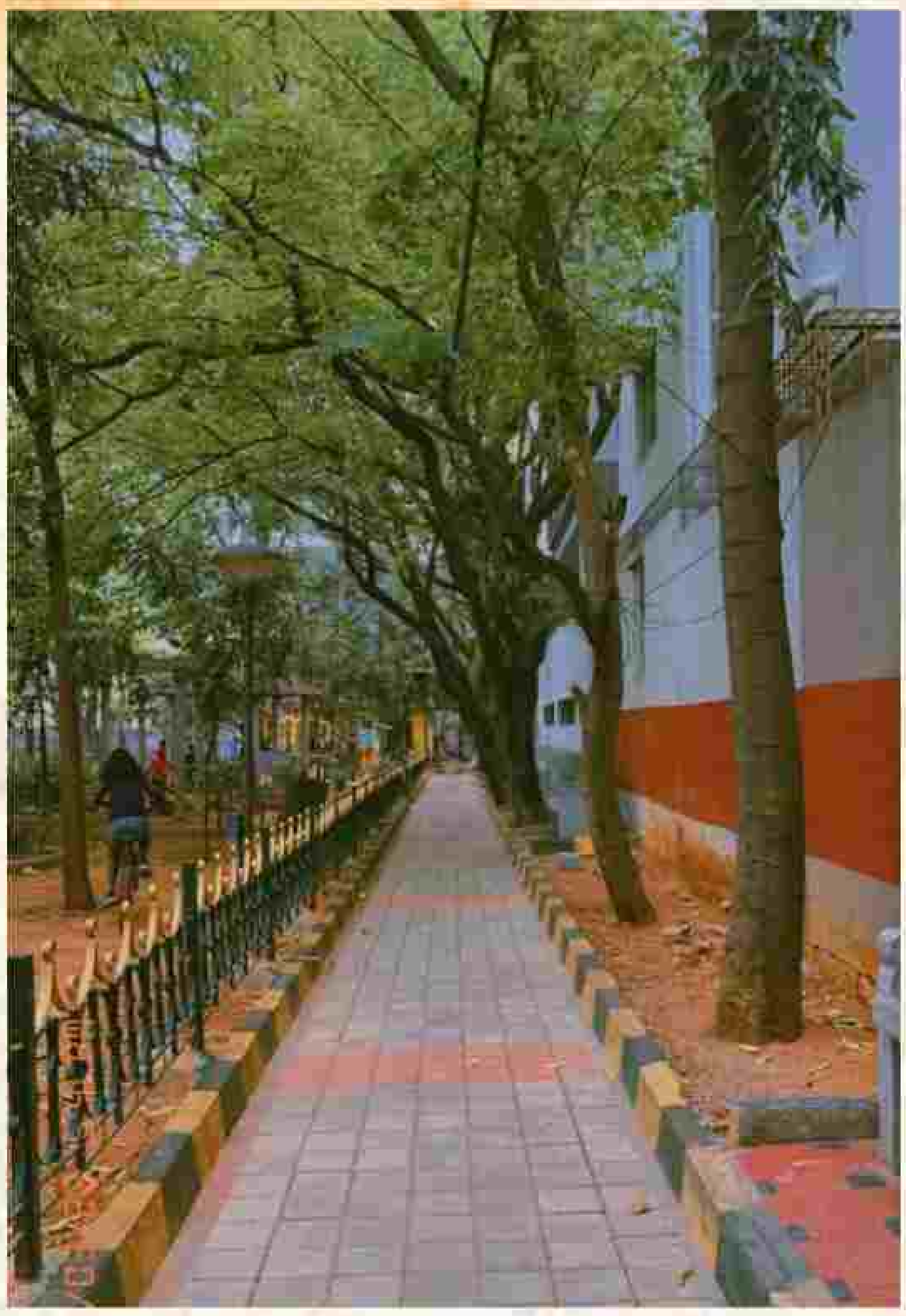

-भूमि राठौड़

'संकल्प'

-एक नयी पहल

'संकल्प' एक संघ नहीं बल्कि हिन्दी विभाग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी शुरुआत हमारे पूर्व अध्यापकों दवारा की गयी थी, अब हमारी विभागाध्यक्षा प्रो. सुधा कनकानवर के नेतृत्व में हम इस संघ को आगे बढ़ाने का पूर्ण प्रयास कर रहे हैं। जिससे भारत की भाषा और सभ्यता को अक्षुण्ण रख सकें और लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम, सम्मान एवं जागरूकता ला सकें।

'संकल्प' की शुरुवात जिस सोच और जिस उद्देश्य से की गई थी उसे पूर्ण रूप से सफल बनानेमें आज भी विद्यार्थी लगे हुए हैं। उनकी यही चाह और कोशिश संकल्प को हर साल और बेहतर बना रही है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के साथ - साथ संकल्प अब संकल्प अपनी सीमा को धीरे धीरे आगे बढ़ रहा है और ऐसे ही बढ़ता रहेगा। आभास-पत्रिका , अलफ़ाज़ , ख़ुशी , ओपेन माइक, और भी कई विधाओं से लोगो तक पहुँचने के मौके मिल रहे हैं और संकल्प की कोशिश रहेगी की आगे भी मिलते रहे।

हिंदी दिवस-२०२२

z

खुशी - इवेंट

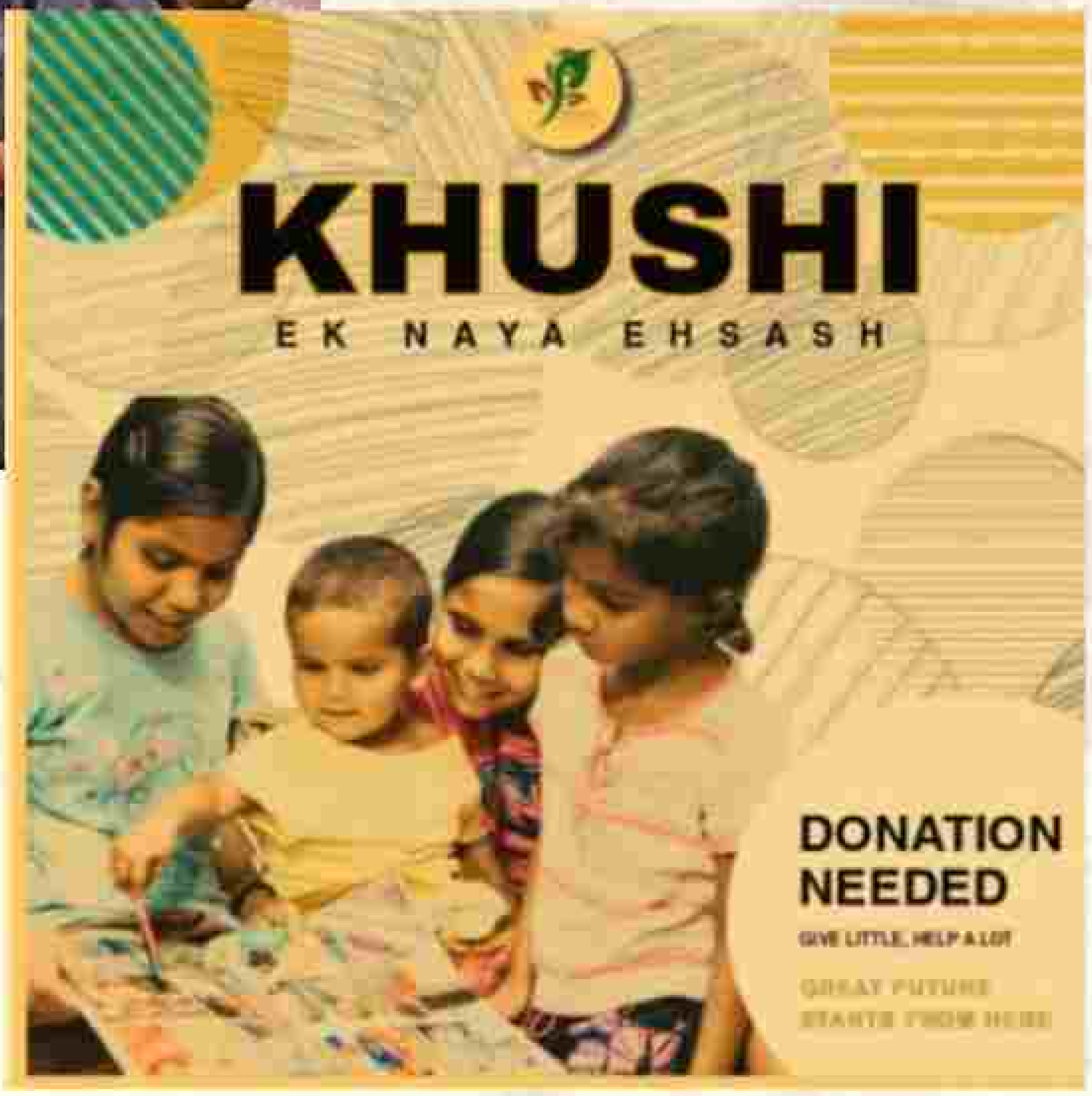

हिंदी परिषद

'संकल्प'

२०२२-२३

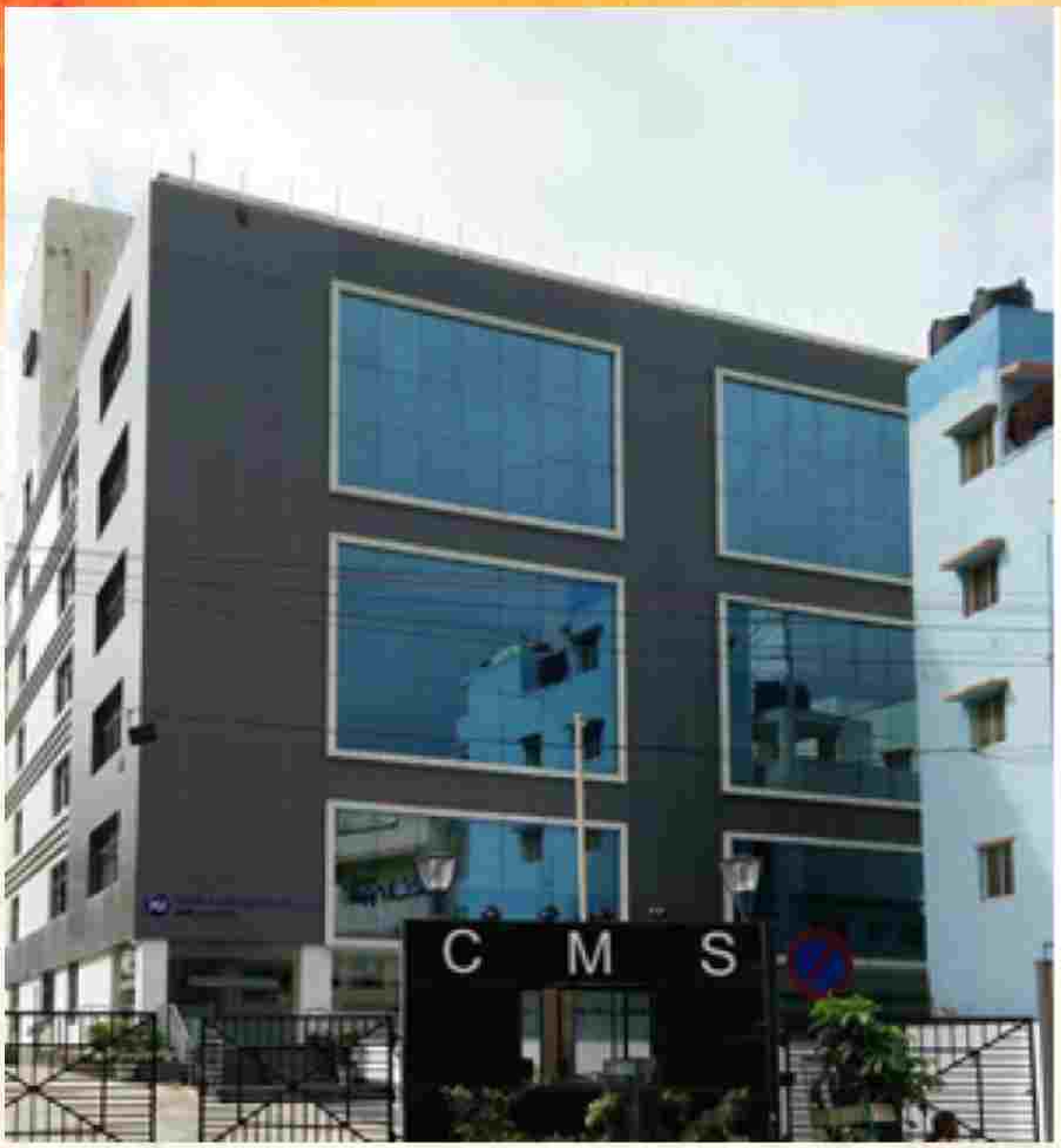

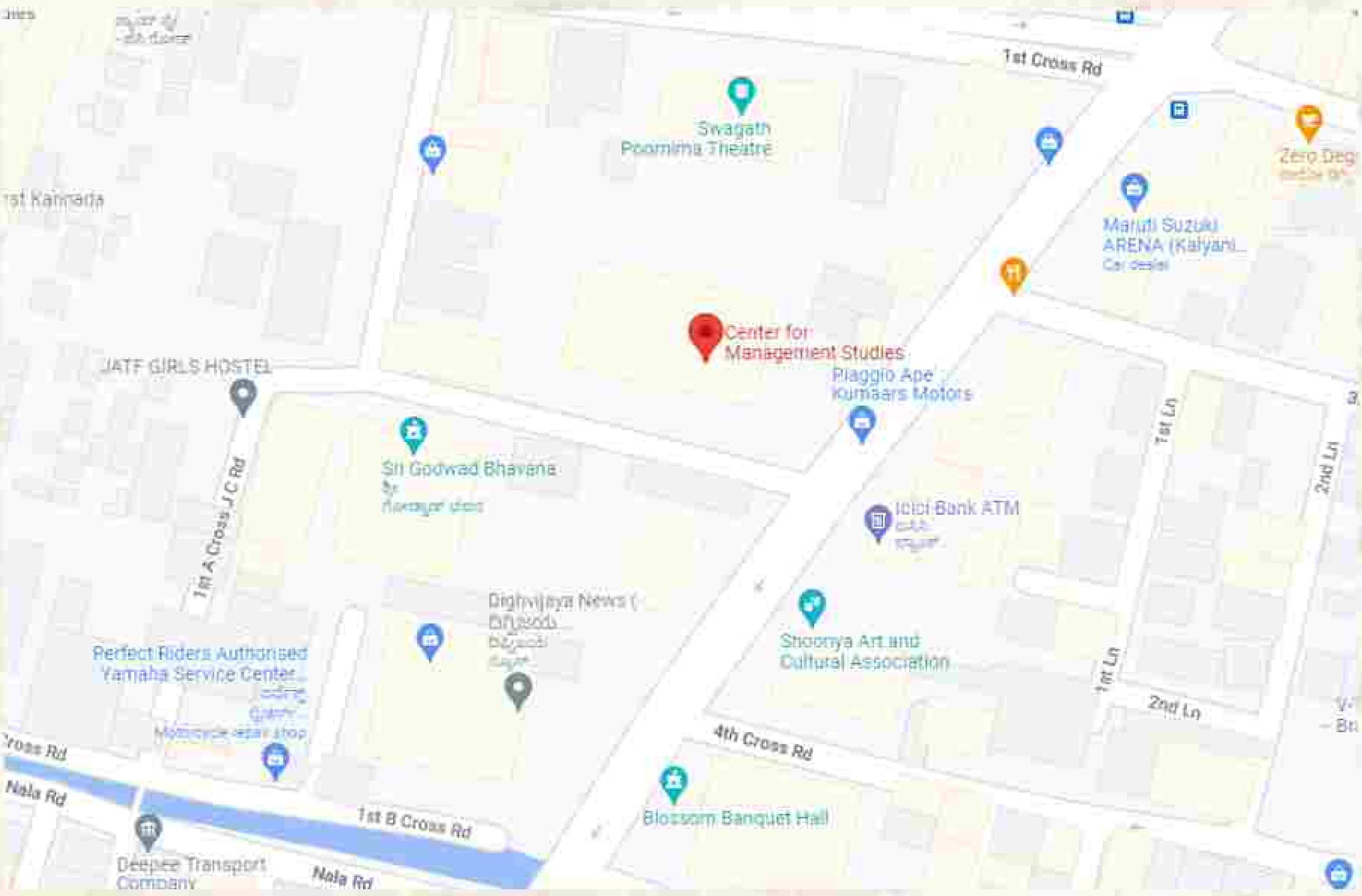

133, Lalbagh Main Road, Bengaluru-560027.
www.cms.ac.in